प्रतिवेदन

राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय श्री रघुनाथ कीर्ति परिसर, देवप्रयाग द्वारा भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद का जन्म दिवस राष्ट्रीय शिक्षा दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय शिक्षा दिवस 2022 की थीम पाठ्यक्रम बदलना और शिक्षा को बदलना विषय को केन्द्रित करते हुए मुख्य वक्ता राजकीय महाविद्यालय देवप्रयाग के प्राध्यापक डॉ महेशानंद नौड़ियाल ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में मौलाना आजाद उदारवादी एवं सार्वभौमिकता के प्रतिपादक थे शिक्षा केवल आँकड़ों एवं तथ्यों का संग्रह न होकर मनुष्य का समग्र विकास है।उन्होंने कहा कि शिक्षा से आर्थिक प्रगति, राष्ट्र की सफलता, जीवन में लक्ष्यों को निर्धारित करना आसान हो जाता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता परिसर निदेशक प्रो. एम. चंद्रशेखर ने की। उन्होंने कहा कि मौलाना कलाम स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री बने और वर्ष 1958 में अपनी मृत्यु तक इस पद पर बने रहे। उनके कार्यकाल के दौरान देश में तीन आयोग विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) एवं संस्कृत शिक्षा आयोग (1956-57) बने। इसके अतिरिक्त पहले IIT, IISc और स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्किटेक्चर की स्थापना भी उनके कार्यकाल के दौरान की गई थी। शिक्षा ही सभी समस्याओं का समाधान है। चाहे गरीबी-अशांति हो या फिर विकास की कमी।इन सभी समस्याओं का समाधान का रास्ता अगर कहीं से गुजरता है, तो वह है शिक्षा। मौलाना अबुल कलाम का जीवन मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित था। वे महात्मा गाँधी के विचारों से काफी प्रभावित थे।कलाम विभाजन के कट्टर विरोधी थे तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता के समर्थक थे। शिक्षा हमें सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरुक करते हुए पर्यावरण समस्याओं को सुलझाने के लिए समाधान प्रदान करती है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीपप्रज्जवलन एवं वैदिक मंगलाचरण के साथ हुआ। कार्यक्रम की प्रस्तावना एवं स्वागत भाषण कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अरविन्द सिंह गौर ने प्रस्तुत किया। वेद विभागाध्यक्ष डॉ शैलेन्द्र प्रसाद उनियाल ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया ।इस अवसर पर न्याय विभागाध्यक्ष डॉ सच्चिदानंद स्नेही, डॉ श्रीओम शर्मा, डॉ वीरेन्द्र बर्त्वाल, श्री पंकज कोटियाल, डॉ अमंद मिश्र, डॉ जनार्दन सुबेदी, श्री रघु बी. राज, डॉ मनीषा आर्या, डॉ मोनिका बोल्ला आदि उपस्थित थे।